Jaffery Alexander
CH — 4

Page No
Date / 201

नवप्रकार्यवाद की आलोचना
(Criticism of Neofunctionalism)

Q. जे. अलेक्जेंडर के नवप्रकार्यवाद की लूहमान ने किन आधारों पर आलोचना की है?

अथवा

जे. अलेक्जेंडर ने सामाजिक व्यवस्था के कौन-से प्रकार बताये हैं?

उत्तर → जिस प्रकार पारसंस के विद्यार्थी रॉबर्ट मर्टन ने अपने गुरू के सिद्धांतों और विचारों की आलोचना की उसी प्रकार पारसंस के विद्यार्थी लूहमान ने भी अपने गुरू के सैद्धान्तिक विवेचन को अस्वीकार किया। लूहमान जर्मनी के निवासी थे लेकिन उनकी शिक्षा दीक्षा अमेरिका मे हुई थी, लूहमान ने नवीन प्रकार्यवाद को प्रस्तावित किया था। जेफ्री अलेक्जेंडर (Jefrey C. Alexander) ने लूहमान के नवप्रकार्यवाद की घोषणा तो की है लेकिन वे साथ ही इस प्रकार्यवाद की आलोचना करते हुए लिखते है कि न तो उसमें स्पष्ट अवधारणाएँ है न कोई निश्चित विधि है और न कोई मॉडल या वैचारिकी। अलेक्जेंडर के अनुसार लूहमान का नवप्रकार्यवाद एक सिद्धान्त है जो

1) वैयक्तिक, संरचनात्मक और सांस्कृतिक स्तरों पर प्रकार्यवादी का ऐसे विश्लेषण के अवसर देता है।
2) यह नवप्रकार्यवाद व्यवस्था और अव्यवस्था का विश्लेषण के अवसर देता है,
3) मानवीय प्रक्रियाओं को उजागर करता है।
4) सामाजिक विभेदीकरण को स्पष्ट करता है और
5. संस्थागत क्षेत्रों के बीच मे अन्तः क्रियाएँ स्थापित करता है।

लूमान का प्रकार्यवादी सिद्धान्त व्यवस्था और पर्यावरण के अन्तर पर केन्द्रित है। उनके अनुसार व्यवस्था और पर्यावरण में जो भी जटिलता है उसे कम करना चाहिए। किसी भी संगठन मे व्यक्ति की क्रियाएँ काल (समय) स्थान और प्रतीकों के माध्यम से होती है वे प्रक्रियाएँ जो व्यवस्था और पर्यावरण की जटिलताओं को कम करती है उन्हे लूमान प्रकार्यात्मक कार्य-विधि कहते है। व्यवस्था की सभी प्रक्रियाएँ संचार के माध्यम से चलती है संक्षेप मे, लूमान के सामान्य व्यवस्था उपागम का यह प्रकार्यात्मक विश्लेषण है।

जब अलेक्जेंडर लूमान के व्यवस्था या प्रकार्यात्मक सिद्धान्त की आलोचना करते है तो बकौल अलेक्जेंडर पर प्रश्न उठता है कि परम्परागत प्रकार्यात्मक विश्लेषण में जो समस्याएँ आती है क्या उनका निदान लूमान ने किया है? क्या लूमान का प्रकार्यवादी-व्यवस्था सिद्धान्त सामाजिक परिवर्तन पर कोई गहरी अन्तर्दृष्टि देता है?

अलेक्जेंडर उपरोक्त दो प्रश्न रखते तो करते है पर उनके उत्तर मे कहते है कि पहला लूमान ने बहुत सहजता से प्रक्रियात्मक विश्लेषण की समस्या को टाल दिया है या उनकी उपेक्षा कर दी है। उनका तो विचार है कि प्रकार्यात्मक आवश्यकताएँ व्यवस्था की जटिलता को कम कर देंगी और पर्यावरण के साथ अपना अनुकूलन कर लेंगी। दूसरा, उनका कहना है कि व्यवस्थाओं की आवश्यकताओं की पूर्ति क्रिया-विधियाँ कर लेंगी। इस तरह के तर्क पुनरुक्ति मात्र है।

अलेक्जेंडर जब लूमान के प्रकार्यात्मक व्यवस्था सिद्धांत का मूल्यांकन करते है तो स्पष्ट रूप से कहते है कि घटनाओं के विश्लेषण

Page No

Date / 201

में यह सिद्धांत किसी भी तरह उपयोगी नहीं है लूहमान जब यह दावा करते है कि वे समाज में अन्तर्दृष्टि पैदा करने के लिए एक वैकल्पिक सैद्धान्तिक आयाम दे रहे है तो उनका यह दावा खोखला सिद्ध होता है। सच में देखा जाये तो लूहमान का व्यवस्था-प्रकार्यात्मक सिद्धान्त अन्य प्रकार्यवादों की ही तरह है तथा किसी भी अर्थ में उनसे भिन्न नहीं है,

अलेक्जेंडर के नवप्रकार्यवाद की विशेषताएँ :—

अलेक्जेंडर के नवप्रकार्यवाद की निम्नलिखित विशेषताओं को इंगित किया है —

1) समाज के वर्णनात्मक मॉडल पर आधारित नवप्रकार्यवाद में समाज को ऐसे तत्वों से निर्मित माना जाता है जिनमे आपस में एक दूसरे के साथ अन्तर्क्रिया होती है तथा जो एक प्रतिमान को जन्म देती है यह प्रतिमान व्यवस्था को अपने परिवेश से अलग करता है। व्यवस्था के अंग सहजीवी आधार पर बंधे होते है तथा इनकी अन्तर्क्रियाएँ किसी भी बड़ी शक्ति द्वारा निर्धारित नहीं होती है इस प्रकार नवप्रकार्यवाद किसी भी एकाकारवादी निर्धारणवाद को स्वीकार नहीं करता है यह एक स्वतंत्र और बहुलवादी उपागम है।

2) नवप्रकार्यवाद क्रिया और व्यवस्था दोनों को समान रूप से महत्व देता है। यह संरचनात्मक प्रकार्यवाद की उस प्रवृत्ति का प्रतिकार करता है जिसमें सामाजिक संरचनाओं और संस्कृति ने व्यवस्था के बृहत स्तरीय स्रोतों को लगभग एकांतिक रूप में महत्व दिया जाता है और सूक्ष्म स्तरीय क्रिया प्रतिमानों पर अधिक ध्यान नहीं दिया जाता है इस प्रकार नवप्रकार्यवाद सूक्ष्म स्तरीय

Page No.
Date / 201

क्रिया सरीमाओं पर भी और वृहत स्तरीय दोनों को समान महत्व देता है।

3) नवप्रकार्यवाद संतुलन विचलन और समाजिक नियंत्रण दोनों को सामाजिक व्यवस्थाओं की यथार्थताएँ स्वीकार करता है इसी परिप्रेक्ष्य में यह सिद्धान्त संरचनात्मक प्रकार्यवाद के एकीकरण के तत्व को एक एक वास्तविक तथ्य की अपेक्षा एक सामाजिक संभावना के रूप में मानता है।

4) नवकार्यवाद संतुलन नामक तत्व को महत्व देता है किंतु इसका परिप्रेक्ष्य संरचनात्मक प्रकार्यवाद से पृथक और विशाल है इसमें गतिशीलता और आंशिक संतुलन को भी सम्मिलित किया गया है जो रूढ़िवादी संरचनात्मक प्रकार्यवाद में नहीं था।

5) नवप्रकार्यवाद पारस्परिक पार्सन्सवादी व्यक्तित्व, संस्कृति और प्रणाली व्यवस्था को स्वीकार करते हुए यह भी मानता है कि इन व्यवस्थाओं का अन्तर्बंधन तनावों को जन्म देता है जो परिवर्तन और नियंत्रण दोनों के स्रोत हैं।

6) नवप्रकार्यवाद सामाजिक, सांस्कृतिक और व्यक्तित्व प्रणालियों में विभेदीकरण का प्रक्रियाओं से उत्पन्न सामाजिक परिवर्तन को भी महत्व देता है।

7) नवप्रकार्यवाद अमूर्तीकरण और सैद्धान्तीकरण की स्वतंत्रता के विचार को स्वीकार करते हुए इसमें समाजशास्त्रीय विश्लेषण की किसी भी अन्य विधि के प्रयोग को मान्यता देता है।

Page No

Date / 201

8) सैद्धान्तीकरण की स्वतंत्रता के प्रति सक्रिय होने के कारण नवयथार्थवाद सन्तुलन के साथ - साथ व्यवस्था में तनाव उसमें उत्पन्न संघर्ष के अस्तित्व को भी मान्यता देता है।